प्रकाशनार्थ

कार्ल मार्क्स पर सम्मेलन - दिन-5

पटना, 20 जून। आद्री द्वारा कार्ल मार्क्स पर आयोजित पांच दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन के अंतिम दिन बुधवार को पॉल लाफार्ज स्मारक व्याख्यान प्रस्तुत करते हुए अमेरिका के पीपल प्रोग्राम इंटरनेशनल और पामर इंस्टीट्यूट के उपाध्यक्ष केविन एम. सैंडर्स ने कहा कि ''भविष्य का अनुमान लगाने का सबसे अच्छा तरीका उसे खुद तैयार करना है। और अधिकाधिक मुनाफे के लिए ठीक यही चीज पूंजीवादी उत्पादन नैतिक-अनैतिक, कानूनी-गैरकानूनी तरीकों से दशकों से कर रहा है।'' व्याख्यान का शीर्षक था - 'मूल स्थिति परिवर्तकों के बतौर कृत्रिम बुद्धि और प्रतिनिधि प्रौद्योगिकियां : भविष्य में क्या हो सकता है?'

सूचना और संचार प्रौद्योगिकियों में विकास के जरिए पूंजीवादी वैश्विक व्यवस्था एक महत्वपूर्ण क्रांति के दौर से गुजर रही है। पूरी दुनिया में जिस तरह से वस्तुओं का सेवाओं का उत्पादन किया जाता है, उसके लिए इसके व्यापक निहितार्थ हैं। आज चीजें जिस तरह से हैं उसके आधार पर अनुमान किया जा सकता है कि रोबोट उत्पादन प्रक्रिया में मानवों की जगह ले लेंगे जिसके कारण भारी बेरोजगार पैदा होगी।

कृत्रिम बुद्धि वाली कंपनियों का नाम लिए बिना उन्होंने कहा कि पिछले तीन दशकों में दुनिया में सूचना और संचार क्षेत्र में ''डिजिटल कुलीनों'' की उन्नति होती दिख रही है।

ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय की सेवानिवृत्त प्रोफेसर बारबरा हैरिस ह्वाइट ने 'लघु उत्पादन और भारत का विकास' विषय पर अपना विशेष व्याख्यान देते हुए कहा कि वस्तुओं का छोटे पैमाने पर उत्पादन उनके लिए सैद्धांतिक समस्या होती है जो पूंजीवादी विकास को सिद्धांत रूप देने का प्रयास करते हैं। एक उदाहरण देते हुए उन्होंने कहा कि अगर किसी बुनकर के पास अपना करघा नहीं हो और करघा मालिक व्यापारी के लिए उत्पादन करता है, तो वह गुप्त रहता है, लेकिन करघे का मालिक होने पर वह लघु उत्पादक हो जाता है।

उन्होंने कहा कि भारत में लघु वस्तु उत्पादन कृषि और विनिर्माण आधारित उत्पादन प्रक्रियाओं में ही नहीं, व्यावसायिक और यहां तक कि (ग्रामीण) वित्तीय क्षेत्रों में भी केंद्र में है। उन्होंने यह भी कहा कि भारत के सकल घरेलू उत्पाद में कृषि का योगदान विगत वर्षों में लगातार घटता गया है। हालांकि जीविका के लिए कृषि पर निर्भर लोगों का अनुपात असंगत रूप से बहुत ऊंचा है।

लघु वस्तु उत्पादन भारत सहित दक्षिण एशिया में ही नहीं, यूरोप के भी के कई हिस्सों में चल रहा है। मार्क्स ने लघु उत्पादन पर लिखा था लेकिन उनका लेखन इधर-उधर बिखरा हुआ था, किसी एक जगह पर नहीं। उन्होंने लघु उत्पादकों का वर्णन करने के लिए किसान, परिवार, कारीगर आदि शब्दों का उपयोग किया।

ASIAN DEVELOPMENT RESEARCH INSTITUTE
BSIDC Colony, Off Boring-Patliputra Road, Patna - 800 013, Tel. : 0612-2575649, Fax : 0612-2577102
E-mail : adripatna@adriindia.org / adri_patna@hotmail.com, Website : www.adriindia.org

ऑस्ट्रेलिया के कर्टिन विश्वविद्यालय के प्रोफेसर पीटर बिलहार्ज ने कहा कि पूंजीवादी उत्पादन हर चीज को विनिमय मूल्य प्रदान करता है, चाहे वह चीज प्यार, सेक्स, दृश्यावली या सौंदर्य ही क्यों नहीं हो। लेकिन मालिकाना व्यक्तित्व के बजाय व्यक्ति की सुशीलता ही उसे अपने आसपास के लोगों के साथ शांतिपूर्ण सहअस्तित्व में रहने में सक्षम बनाती है। मार्क्सवाद को पुनर्विचारित, पुनर्निर्मित और पुन:कल्पित करने की जरूरत है जो आधुनिक समय के लिए अनुकूल हो। श्रोताओं के प्रश्न का उत्तर देते हुए उन्होंने कहा कि मार्क्सवादी युटोपिया उस युटोपिया से भिन्न नहीं है जो हर कोई हासिल करना चाहता है। एक अन्य प्रश्न का उत्तर देते हुए उन्होंने कहा कि 1917 की बोल्शेविक क्रांति के बाद लोकप्रिय हुईमार्क्स को मार्क्सवाद के खिलाफ खड़ा करने की प्रवृत्ति व्यर्थ है और उससे बचा जाना चाहिए। 'पारिस्थिति विषयक मार्क्सवाद' पर टिप्पणी करते हुए उन्होंने कहा कि सार्वजनिक चर्चा में पूंजीवादी संचय के अतिसक्रिय स्वरूप पर फोकस किया जाना चाहिए ताकि शहरों में आवास, पानी और अन्य नागरिक अधिसंरचना की समुचित उपलब्धता जारी रहे। उन्होंने ई.एम.एस. नंबूदरीपाद स्मारक व्याख्यान दिया जिसका शीर्षक 'सर्क्लिंग मार्क्स' था।

आज के अन्य प्रमुख वक्ताओं में अमेरिका के ऑक्टन कम्यूनिटी कॉलेज के प्रोफेसर पीटर हुडिस शामिल थे जिन्होंने 'मार्क्स की पूंजी में उत्तर-पूंजीवादी समाज की सूचना' शीर्षक हर्बर्ट मारकस स्मारक व्याख्यान दिया।

अमेरिका के बोस्टन विश्वविद्यालय के प्रोफेसर तियान यू काओ ने '21वीं सदी में समाजवाद की संकल्पना पर मार्क्स के विचार' शीर्षक चे गुआरा स्मारक व्याख्यान दिया। उन्होंने कहा कि सोवियत मॉडल के धराशायी होने और 1970 के दशक से कींसवाद में गिरावट आने के कारण समाजवादियों के लिए गंभीर चुनौती पेश हुई है।

नेशनल वाटर कंजर्वेशन फाउंडेशन के अध्यक्ष और नेपाल सरकार के पूर्व मंत्री दीपक ग्यावाली ने व्लादीमीर लेनिन स्मारक व्याख्यान प्रस्तुत किया जिसका शीर्षक 'क्या साम्यवादी शासित नेपाल लाल, गुलाबी या नीला है?'

जहां फ्रांस के सीईपीआइआइ के वरिष्ठ आर्थिक सलाहकार ज्यां जोसेफ बिल्लोट ने 'मार्क्स और बुद्धिमत्ता का अर्थशास्त्र' विषय पर पी.सी. जोशी स्मारक व्याख्यान दिया, वहीं लंदन स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स के प्रोफेसर चुन लिन ने कोज़ो उनो स्मारक व्याख्यान दिया जिसका शीर्षक था - 'मार्क्स और एशिया : एशिया ने मार्क्स की क्रांति और इतिहास की संकल्पना को कैसे बदला?'

कनाडा के टोरंटो विश्वविद्यालय के सेवानिवृत्त प्रोफेसर सैमुअल हॉलैंडर ने 'कार्ल मार्क्स का क्रांतिकारी परिचय और मार्क्स-जॉन स्टुअर्ट मिल के बीच बौद्धिक संबंध' विषय पर समापन संबोधन किया।

लॉर्ड मेघनाद देसाई ने सम्मेलन का सारांश प्रस्तुत किया। सम्मेलन में विश्व के 18 देशों के विद्वानों ने भाग लिया।
आद्री के नीरज कुमार ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

(अंजनी कुमार वर्मा)

ASIAN DEVELOPMENT RESEARCH INSTITUTE
BSIDC Colony, Off Boring-Patliputra Road, Patna - 800 013, Tel. : 0612-2575649, Fax : 0612-2577102
E-mail : adripatna@adriindia.org / adri_patna@hotmail.com, Website : www.adriindia.org